❁ 13 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ ज्ञान-

1] बाबा ने हम बच्चों को यह राज़ समझाया है कि सभी की यह एक ही हट्टी है, यहाँ सबको आना ही है। यह बहुत गुह्य राज़ है। इस राज़ को जानने वाले बच्चे ही सबके कल्याणकारी बनते हैं।

2] ईश्वर अगर कभी न आया हुआ तो उनको बुलाते ही क्यों कि हे लिबरेटर आओ, हे पतित-पावन आओ। जबकि पतित-पावन को याद करते हैं फिर शास्त्र क्यों पढ़ते? तीर्थों पर क्यों जाते? वहाँ बैठा है क्या? कोई जानते ही नहीं जबकि पतित-पावन ईश्वर है तो गंगा स्नान आदि से कोई पावन हो कैसे सकते। स्वर्ग में कोई जा कैसे सकते, जन्म तो यहाँ ही लेना है। नई दुनिया और पुरानी दुनिया में फर्क तो है ना। इसका सतयुग थोड़ेही कहेंगे।

3] यहाँ आये भल परन्तु पढ़े नहीं, फिर स्वर्ग में तो जायेंगे ना। यहाँ तो बैठे है ना। समझते हैं स्वर्ग में जाना है, फिर क्या भी बनें। वह तो पढ़ाई नहीं हुई ना। थोड़ा भी सुना तो उसका फल मिल जाता है। पढ़ाई से तो बड़ी स्कॉलरशिप मिलती है। बाप से ऊंच से ऊंच पद पाना है तो पुरूषार्थ करना पड़े।

4] इस समय आप सभी बच्चों को दो तख्त मिलते हैं- एक अकाल तख्त, दूसरा दिल तख्त। लेकिन तख्त पर वही बैठता है जिसका राज्य होता है। जब अकाल तख्तनशीन है तो स्वराज्य अधिकारी हैं और बाप के दिल तख्तनशीन हैं तो बाप के वर्से के अधिकारी हैं, जिसमें राज्य भाग्य सब आ जाता है। कर्मयोगी अर्थात् दोनों तख्तनशीन। ऐसी तख्तनशीन आत्मा का हर कर्म श्रेष्ठ होता है क्योंकि सब कर्मेन्द्रियां लॉ और ऑर्डर पर रहती हैं।

5] जो सदा स्वमान की सीट पर सेट रहते हैं वही गुणवान और महान हैं।

✺ योग-

1] मीठे बच्चे– बाप, टीचर और सतगुरू यह तीन अक्षर याद करो तो अनेक शिप्तें (विशेषतायें) आ जायेंगी।

2] पतित-पावन बाप को याद करने से ही वर्सा मिलेगा। याद करते-करते मरेंगे तो बाप की सब मिलकियत मिलेगी। बेहद के बाप की मिलकियत है स्वर्ग।

✺ धारणा-

1] तुमने सन्यास किया है विकारों का। वह तो कह देते हैं हमने घरबार छोड़ा, तुम कहते हो हम सारी दुनिया के विकारों का सन्यास करते हैं। नई दुनिया में जाना कितना सहज है। हम सन्यास करते हैं सारी पुरानी सृष्टि, तमोप्रधान दुनिया का।

2] तो बाप बच्चों को कहते हैं सिर्फ यह विचार करो– बाबा, हमारा बाप भी है, शिक्षक और सतगुरू भी है। सबको ले जायेंगे। अक्षर ही दो हैं– मनमनाभव, इसमें सब आ जाता है।

3] कोई को नाराज़ भी नहीं करता है। गृहस्थ व्यवहार में रहते सिर्फ पवित्र रहना है।

4] एक बाप के सिवाए कोई की याद नहीं आनी चाहिए और संग तोड़ एक संग जोड़ना है।

5] बाप को याद ही नहीं कर सकेंगे तो पावन कैसे बनेंगे।

...2

❋ 13 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

[2]

❋ सेवा-

1] जो अपना हर कदम सर्विस में बढ़ाते रहते हैं, वहीं पद्मों की कमाई जमा करते हैं। अगर बाबा की सर्विस में कदम नहीं उठायेंगे तो पद्म कैसे पायेंगे। सर्विस ही कदम में पद्म देती है, इसी पद्मापद्मपति बनते हो।

2] कोई भी आये तो समझाना चाहिए कि जिसको भगवान कहा जाता है वह बाबा भी है, टीचर भी है और सतगुरू भी है। यह याद हो तो भी ठीक, और कोई की याद न आये।

3] सिर्फ एक बात ही सुनाओ जो दुनिया में और कोई नहीं जानते। बेहद का बाप, बाप है।

4] तुम कुछ भी न पढ़े हुए यह तो समझ सकते हो ना कि हम भाई-भाई हैं। हमारा बाप बेहद का है। बाप आते ही हैं एक धर्म की स्थापन करने, ब्रह्मा द्वारा करते हैं।

5] पढ़ाई याद होगी तो 84 का चक्र भी याद आ जायेगा। यहाँ बेठने से सब याद आना चाहिए। परन्तु यह भी याद आये तो किसको सुनायें भी। चित्र तो सबके पास हैं। शिव के चित्र पर तुम कोई को सुनायेंगे तो कभी गुस्सा नहीं करेंगे। बोलो, आओ तो हम आपको बतायें कि यह शिव बेहद का बाप है ना। इनके साथ आपका क्या सम्बन्ध है? ऐसे फालतू चित्र तो नहीं होगा। शिव के लिए जरूर कहेंगे यह भगवान है, भगवान तो निराकार ही होता है। उनको बाप कहा जाता है। वह शिक्षा भी देते हैं। तुम्हारी आत्मा शिक्षा लेती है। आत्मा ही सब कुछ करती है।

6] बच्चों के पास बैज भी है, घर में मित्र-सम्बन्धी आदि तो बहुत आते हैं। कोई मरता है तो भी बहुत आते हैं। उन्हों की भी तुम बहुत अच्छी सर्विस कर सकते हो। शिवबाबा का चित्र तो बहुत अच्छा है। भल बड़ा रख दो, इसमें कोई कुछ कहेंगे नहीं। ऐसे नहीं कहेंगे कि यह ब्रह्मा है। यह है गुप्त। तुम गुप्त भी समझा सकते हो। सिर्फ शिव का चित्र रखो और सब चित्र उठा दो। यह शिवबाबा बाप, टीचर, सतगुरू है। यह आते हैं नई दुनिया की स्थापना करने और संगम पर ही आते हैं। यह ज्ञान तो बुद्धि में हैं ना। बोलो, शिवबाबा को याद करो और किसी को याद नहीं करो। शिवबाबा पतित-पावन है, वह कहते हैं मुझे याद करो तो तुम मेरे साथ आकर मिलेंगे। तुम गुप्त सर्विस कर सकते हो।

7] यह लक्ष्मी-नारायण इस नॉलेज से ही बने हैं। कहेंगे शिवबाबा निराकार है, वह कैसे आते हैं? अरे, तुम्हारी आत्मा भी तो निराकार है, वह कैसे आती है? वह भी ऊपर से आती है ना, पार्ट बजाने। यह भी बाप आकर समझाते हैं। बैल तर तो आ न सके। बोलेगा कैसे? साधारण बूढ़े तन में आते हैं। समझाने की बड़ी युक्ति चाहिए।

8] कोई कहते तुम भक्ति नहीं करते हो? बोलो, हम तो सब कुछ करते हैं। युक्ति से चलना होता है। किसको उठाने लिए सोचना चाहिए– क्या युक्ति रचें?

9] गंगा जी पर जाकर बैठ जाओ। बोलो, यह पानी में स्नान करने से क्या होगा? क्या पावन बन जायेंगे? तुम तो भगवान को कहते हो हे पतित-पावन आओ, आकर पावन बनाओ। फिर वह पतित-पावन है या यह? ऐसी नदियां तो ढेर हैं। बाप पतित-पावन तो एक ही है। यह पानी की नदियां तो सदैव हैं ही। बाप को तो पावन बनाने के लिए आना पड़ता है। आते भी हैं पुरूषोत्तम संगमयुग पर, आकर पावन बनाते हैं।

10] शिवबाबा ही तुम्हारा बाप, टीचर, सतगुरू है, उनको याद करो। समझाने की युक्ति रचनी चाहिए।